International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-3 June- 2015
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

संस्कृत नाट्य साहित्य में शोषण की अवधारणा

सतीश कुमार सैन,
व्याख्यता संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय, किशनगढ

भरत के नाट्य शास्त्र के अनुसार पात्रों की वेशभूषा, आकृति, भावभंगिमा आदि क्रियाओं के अनुशरण अभिनय और प्रदर्शन के द्वारा समाज का वास्तविक चित्रण करना नाटक कहलाता है। नाटक और रूपक में रंगमंच की सहायता से समाज के वास्तविक स्वरूप को मूर्त रूप प्रदान किया जाता है। इसलिए कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। संस्कृत साहित्य के प्रमुख नाटकों में कालिदास रचित अभिज्ञानशंकुलतम् मालविकाग्निमित्रम् विक्रमोर्वशीयम् तथा शुद्रक रचित मृच्छकटिकम् आदि प्रमुख है। नाटको में स्थान–स्थान पर रचनाओं का वर्णन करने में पात्रों की सहायता ली गई है। कवि जिस किसी घटना का वर्णन करता है उसमें उसी के अनुरूप पात्रों का भी चयन करता है जैसे राजा, ब्रह्मचारी, अध्यापक आदि के वर्णन में ब्राह्मण वर्ग का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है

संस्कृत व्याकरण में दल् विदारणे विकसने धातु से क्त प्रत्यय लगने पर दलित शब्द निष्पन्न होता है इस अर्थ में दलित शब्द से पदस्पृष्ट, शोषित, अछुत मर्दित पैरो से रोंदा गया आदि अर्थ अभिव्यक्त होते है जबकि विकसन अर्थ में प्रस्फुटित या प्रश्न अर्थ अभिव्यक्त होता है। इस प्रकार प्रथम अर्थ में दलित या शोषित शब्द उस सम्पूर्ण वर्ग विशेष का परिचायक है जिसका समाज में किसी न किसी माध्यम से शासक वर्ग या उच्च वर्ग के द्वारा शोषण होता है। दूसरे अर्थ में वैदिक वर्ण व्यवस्था के क्षुद्र को कालांतर में दलित शब्द से सम्बोधित किया जाने लगा।

अतिचार या अत्याचार दोनो समानार्थक है अर्थात् व्यवहार और आचरण का अतिक्रमण करना अत्याचार कहलाता है। वर्तमान में यही शब्द अधिकांशतः प्रयुक्त होता है भारतीय नाट्य शास्त्र में यह अत्याचार या अतिक्रमण तीन प्रकार से परिलक्षित होता है :

1. राजा या शासक वर्ग द्वारा
2. राजपुरूषों द्वारा
3. अन्य

राजा या शासक वर्ग द्वारा किए गए अत्याचार का उल्लेख साहित्य में स्थान–स्थान पर उपलब्ध होता है कई बार निरापराध व्यक्ति भी राजा की इच्छा के अनुसार कार्य नहीं करने पर वह दण्ड का भागी बन जाता है जैसाकि मुद्रा राक्षक नामक नाटक में विशाखदत्त ने कहा है

भवति पुरूषस्य व्याधिर्मरणं वा सेविते अपथ्य।
राजापथ्य पुनः सेविते सकलमपि कुलं म्रियते।। 1

राजा का अपथ्य पथ्य से भी ज्यादा भयंकर होता है। परिणामस्वरूप श्रेष्ठी चन्दनदास को पुत्र एवम् पत्नी सहित वध्य स्थल पर ले जाया जाता है। राष्ट्ररक्षणम में राज्य मद से सामान्य वर्ग को बार–बार प्रताड़ित किए जाने का वर्णन प्राप्त होता है। शासन गुणों के स्थान पर चाटुकारिता को पसंद करने लगता है। तब उस राज्य का विनाश निश्चित समझा जाता है। गुणवान कलाकार ऐसे समय में अपनी कला का सम्यक प्रदर्शन नहीं कर पाते है तथा न ही उचित पुरष्कार नाटक के नायक सुदंर सिंह के साथ राजा महाबल द्वारा किया गया दुर्व्यवहार जिसका स्पष्ट उदाहरण है। राजा ईर्ष्यावश अपनी पत्नी से कहता है कि इसकी विजय भी पराजय ही समझनी चाहिए। सुंदर भी अधिर होकर कहता है कि

जानामि संसृतितले न गुणादरोस्ति
संवर्धितो भवति निर्गुणं किंशुकादि।। 2

इस प्रकार की बार सुनकर ईर्ष्यावश राजा सुंदर सिंह को राजसभासद के पद से च्युत कर निर्वासित कर देता है।

बालचरितम् नामक नाटक में राजा कंश के द्वारा देवकी और वासुदेव को कारागृह में डाल देता है तथा इसी कंश ने अपने पिता उग्रसेन को बंदी बनाया था। अभिज्ञानशंकुलत के छठे अंक में दो राजपुरूष एक व्यक्ति को लेकर राजा के समुख पेश होते है तथा उस व्यक्ति का दोष सिद्ध होने से पहले ही न केवल उसको प्रताडित करते है अपितु उसके साथ मारपीट भी करते है। प्रथम राजपुरूष कहता है कि इस दोषी पुरूष का वध करने के लिए फुलों की माला पहनाने के लिए मेरी दोनो भुजाएं फड़क रही है। निर्दोष बद्धपुरूष/चोर निवेदन करता है कि आप बिना कारण ही मेरे वध के बारे में सोच रहे है जो अनुचित है। यह सुनकर दुसरा राजपुरूष कहता है कि या तो यह गिद्धों की बलि चढेगा या कुतों के मुहं में पडेगा। इस प्रकार के राजपुरूषों के द्वारा कमजोर लोगो पर किए गए अत्याचार का निर्दशन भारतीय नाट्य शास्त्र में यत्र–तत्र दिखाई देता है।

मृच्छकटिकम् नामक रूपक मे राजा का साला शकार वसंत सेना के द्वारा प्रेम प्रस्ताव को अस्वीकार करने पर चारूदत्त के साथ बदला लेता है तथा वसंत सेना की हत्या का आरोप निर्दोष ब्राह्मण चारूदत्त पर आरोपित कर देता है। न्यायाधीश चारूदत्त को देश से निष्काषित होने का दण्ड देता है लेकिन राजापालक न्यायाधीश के निर्णय की अवहेलना कर उसे मृत्यु दण्ड देता है।

राजा या राजपुरूषों के अतिरिक्त अत्याचार का उल्लेख भी संस्कृत नाटको में अनेक जगह उपलब्ध होता है। वेणीसंहारम् नामक नाटक में अश्वत्थामा कर्ण को दुरात्मन् सुतापसद रथकारकुलकलंक, सूतपुत्र आदि अपमानजनक शब्दों से सम्बोधित करता है। महाकवि क्षुद्रक के काल में द्युतक्रीडा में हारने पर धन का भुगतान समय पर नहीं करने के कारण अपराधी माना जाता था तथा निचे सिर उपर पैर करके लटकाकर कठोर यातनाऐं दी जाती थी। यह सजा तब तक दी जाती थी जब तक जुआरी की पीठ पर चोट के निशान स्पष्ट दिखाई देने लग जाए। इसी प्रकार की विवेकानन्दविजयम् महानाटक के पथप्रदर्शनम् नामक द्वितीय अंक में प्रीति योग प्रवर्तक होलिकाचार्य शीष्य के द्वारा अंधे देवीदास को अस्पृश्य चाण्डाल कहकर सम्बोधित किया गया है। शंभूनाथ अधमाधम अधन्य, चाण्डाल के स्पृर्श से दुषित स्वयम् को गौमूत्र से संशोधित करता है। देवीदास भी स्वयम् को अस्पृश्य स्वीकार करता हुआ नरेन्द्र से कहता है कि वह उसके स्पर्श से दुषित हो गया है। नरेन्द्र इसी बुराई से व्यथित होकर कहता है कि यह अन्याय और सामाजिक कलंक, पाप कब विलीन होगा। इसी नाटक के पंचम अंक में मलवाह नरेन्द्र के चारों और चित्कार करता हुआ ताली बजाकर घूमता है। जब नरेन्द्र मलवाह के हाथ से चिलम लेना चाहता है तो आप मेरे स्पर्श से दुषित हो जावोगे यह कहकर देने से मना कर देता है क्योकि वह जन्म से अछूत है। मृच्छकटिकम् प्रकरण में अस्पृश्यता स्पष्ट रूप से नहीं दिखाई देती है लेकिन उस समय भी सामाजिक भेदभाव विद्यमान था। महाकवि शुद्रक ने रूपक में 27 पात्रों का प्रयोग किया है जो समाज के प्रत्येक उत्तर तथा समुदाय से संबंध रखते है। शकार का दास चेट निम्नवर्ण का होने से उसके कथन पर कोई विश्वास नहीं करता है। नाटक के दसवें अंक में जब वह वसंत सेना की हत्या का रहस्य उद्घाटन करता है तब चाण्डाल तक भी उसके कथन पर विश्वास नहीं करते है।

न खलु वंय चाण्डालाश्चाण्डालकुले जातपूर्वपि।
ये अभिभवन्ति साधुं ते पापास्ते च चाण्डालाः।। मृग्चकटिक–10/15

शुद्रक के समय राजा और प्रजा के पश्चात् दूसरा भेद धनी और निर्धन का था राष्ट्ररचणम् रूपक में भी वीणावादन में विलासी को परास्त करने पर सभासद एवम् अमात्य राजा से सुंदर सिंह का अभिंनदन एवम् सत्कार करने का आग्रह करते है लेकिन राजा महाबल उसे अपना आश्रित अल्पवेतन भोगी सेवक, दरिद्र, नौकर आदि कहकर अपमानित करता है। मध्यकाल में सैनिक बनने के लिए लोगो को बाध्य करना मध्यकालिन शासन की निरंकुशता का परिचायक है। राजा नंद की मुरा नामक क्षुद्र पत्नी से उत्पन्न चंदगुप्त को कई बार कुलहीन और वृषल शब्द से सम्बोधित किया गया है। अभिज्ञानशंकुतलम् के छठे अंक में जलोपजीवी मत्स्याखेटक पुरूष की आजीविका का दोनो राजपुरूष मजाक उड़ाते है।

जलोपजीवीमत्स्याखेटकपुरूषः। अभिज्ञानशकुंतलम् 6 अंक

महाकवि भास द्वारा विरचित चारूदत्तम नाटक में दरिद्रता को मनस्वी पुरूष के जीते जी मरने के समान माना गया है। चारूदत्त अपनी सम्पत्ति को दान कर देता है तब अपने पराचीन काल को याद करते हुए कहता है निर्धन दशा को प्राप्त व्यक्ति शरीर सहित होने पर भी मृत समान है। दरिद्रता के कारण अन्य लोगो के द्वारा किया हुआ अपराध भी दरिद्र पुरूष का समझ लिया जाता है। चारूदत्त कहता है कि दरिद्रता और मृत्यु दोनो में मुझे मृत्यु अधिक प्रिय है क्योकि मरने में कष्ट की अनुभूति कम होती है जबकि दरिद्रता अंतहिन दुख है।

दारिद्रयादमरणाद्वा मरणं मम् रोचते।
अल्पक्लेशं मरणं अनन्तकं दुःख दारिद्रयम्।। मृच्छकटिकम् 1/16

उत्तरामचरितम् राजशेखररचित बालरामायण आदि नाटको में भी महिला उत्पीड़न को भी प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है यथा सीता का परित्याग, सीता की अग्नि परीक्षा, द्रौपदी का वस्त्रहरण आदि। इस प्रकार हम देखते है संस्कृत नाटक साहित्य में अस्पृश्य वर्ण, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ण, दलित, अछूत, स्त्री आदि के साथ किसी न किसी रूप में अत्याचार परिलक्षित होता है।